महाकाल चालीसा (Mahakal Chalisa Lyrics in Hindi)

महाकाल चालीसा (Mahakal Chalisa Lyrics in Hindi)

।। दोहा ।।

श्री महाकाल भगवान की महहमा अपरम्पार,
पूरी करते कामना भक्तों की करतार।
ववद्या-बुद्धि-तेज-बल-दूि-पूत-ि्न-ि्ान,
अपने अक्षय कोष से भगवान करो प्रदान।।

।। चौपाई ।।

जय महाकाल काल केनाशक। जय त्रिलोकपतत मोक्ष प्रदायक।।
मृतयुंजय भवबाि्ा हारी। शिंजय करो ववजय हमारी।।
आकाश में तारक ललुंगम्। पाताल में हाटकेश्वरम्।।
भूलोक में महाकालेश्वरम्। सतयम्-लशवम् और सुन्दरम्।।
क्षक्षप्रा तट ऊखर लशव भूलम। महाकाल वन पावन भूलम।।
आशुतोष भोले भण्डारी। नटराज बाघम्बरिारी।।
सृष्टट को प्रारम्भ कराते। कालचक्र को आप चलाते।।
तीर्थ अवन्ती में हैं बसते। दशथन करते सुंकट हरते।।
ववष पीकर लशव तनभथय करते। नीलकण्ठ महाकाल कहाते।।
महादेव ये महाकाल हैं। तनराकार का रूप ि्रे हैं।।
ज्योततमथय-ईशान अिीश्वर। परम् ब्रह्म हैं महाकालेश्वर।।
आहद सनातन-स्वयुं ज्योततश्वर। महाकाल प्रभु हैं सवेश्वर।।
जय महाकाल महेश्वर जय-जय। जय हरलसद्धि महेश्वरी जय-जय।।
लशव केसार् लशवा है शष्क्त। भक्तों की है रक्षा करती।।

जय नागेश्वर-सौभाग्येश्वर। जय भोले बाबा लसद्ि्ेश्वर।।
ऋणमुक्तेश्वर-स्वणथ जालेश्वर। अरुणेश्वर बाबा योगेश्वर।।
पुंच-अटट-द्वादश ललुंगों की। महहमा सबसे न्यारी इनकी।।
श्रीकर गोप को दशथन दे तारी। नुंद बाबा की पीहियाँ सारी।।
भक्त चुंद्रसेन राजा शरण आए। ववजयी करा ररपु-लमि बनाये।।
दैतय दूषण भस्म ककए। और भक्तों से महाकाल कहाए।।
दुटट दैतय अुंि्क जब आया। मातृकाओुं से नटट कराया।।
जगज्जननी हैं माँ धगरर तनया। श्री भोलेश्वर ने मान बिाया।।
श्री हरर की तजथनी से हर-हर। क्षक्षप्रा भी लाए गुंगाि्र।।
अमृतमय पावन जल पाया। 'ऋवष' देवों ने पुण्य बिाया।।
नमः लशवाय मुंि् पुंचाक्षरी। इनका मुंि् बड़ा भयहारी।।
ष्जसकेजप से लमटती सारी। धचुंता-क्लेश-ववपद् सुंसारी।।
लसर जटा-जूट-तन भस्म सजै। डम-डम-डमरू त्रिशूल सजै।।
शमशान ववहारी भूतपतत। ववषिर ि्ारी जय उमापतत।।
रुद्राक्ष ववभूवषत लशवशुंकर। त्रिपुण्ड ववभूवषत प्रलयुंकर।।
सवथशष्क्तमान-सवथ गुणाि्ार। सवथज्ञ-सवोपरर-जगदीश्वर।।

अनाहद-अनुंत-तनतय-तनववथकारी। महाकाल प्रभु-रूद्र-अवतारी।।
ि◌ाता-वविाता-अज-अववनाशी। मृतयु रक्षक सुखराशी।।
त्रिदल-त्रिनेि-त्रिपुण्ड-त्रिशूलिर। त्रिकाय-त्रिलोकपतत महाकालेश्वर।।
त्रिदेव-ियी हैं एकेश्वर। तनराकार लशव योगीश्वर।।
एकादश-प्राण-अपान-व्यान। उदान-नाग-कुमथ-कृकल समान।।

देवदत्त िनुंजय रहें प्रसन्न। मन हो उज्जवल जब करें ध्यान।।
अघोर-आशुतोष-जय औढरदानी। अलभषेक वप्रय श्री ववश्वेश्वर ध्यानी।।
कल्याणमय-आनुंद स्वरुप शलश शेखर। श्री भोलेशुंकर जय महाकालेश्वर।।
प्रर्म पूज्य श्री गणेश हैं , ऋद्धि-लसद्धि सुंग। देवों केसेनापतत, महावीर स्कुंि।।
अन्नपूणाथ माँ पावथती, जग को देती अन्न।महाकाल वन में बसे, महाकाल के सुंग।।
।। दोहा ।।
लशव कहें जग राम हैं, राम कहें जग लशव,
िन्य-िन्य माँ शारदा, ऐसी ही दो प्रीत।
श्री महाकाल चालीसा, प्रेम से, तनतय करे जो पाठ,
कृपा लमले महाकाल की, लसद्ि होय सब काज।।
।।इतत श्री महाकालेश्वर चालीसा सम्पूणथ।।